हरियाणा में प्रिंट मीडिया का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य, वर्तमान संदर्भ और भविष्य के रुझान : प्रिंट मीडिया का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

अश्विनी कुमार

रिसर्च स्कोलर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, महर्षि दयांनद विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश

हरियाणा 1 नवम्बर 1966 को भारत के एक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। इसका क्षेत्रफल 44212 वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या 2.11,44,564 है। हरियाणा राज्य कृषि और औद्योगिक दृष्टि से देश के अग्रणी राज्यों में से है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र को हरियाणा तीन ओर से घेरे हुए है। हरियाणा के उत्तर पश्चिम में पंजाब, पूर्व में उत्तर प्रदेश, उत्तर में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण व पश्चिम में राजस्थान स्थित है। इसकी 679 प्रतिशत जनसंख्या शिक्षित है और राज्य में 28.9 फीसदी लोग शहरों में तथा 71.9 ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं।

मुख्य शब्द : संचार, समाचार पत्र, हिंदी, प्रबंधन

परिचय

हरियाणा का इतिहास काफी पुराना है। ज्यादा ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में जाने की बजाय अध्ययन में 1857 के बाद के परिदृश्य पर संक्षेप में प्रकाश डालना अपेक्षित समझा गया है। 1857 से पहले हरियाणा दिल्ली प्रांत में शामिल था और दिल्ली ही उसकी राजधानी थी। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा के लोगों ने अंग्रेजों का जमकर मुकाबला किया। उसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों ने हरियाणा को दिल्ली से अलग करके पंजाब के साथ मिला दिया। यही नहीं, विदेशी सत्ता ने हर तरह पिछड़ा रखा। शिक्षा की दृष्टि से प्रायः हरियाणा के लोग पीछे रहे। हरियाणा के अलग राज्य के रूप में उभर कर आने से ही इसके चहुंमुखी विकास की ओर ध्यान दिया गया है।

हरियाणा में प्रिंट मीडिया की शुरुआत के बारे में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। जिस प्रकार भारत में पत्रकारिता की शुरुआत अंग्रेजी पत्रकारिता से ही विकसित हुई है, उसी प्रकार हरियाणा का प्रथम समाचार पत्र मफसलिट (डवनिपसपजम) अंग्रेजी भाषा में ही प्रकाशित हुआ। संभवत मफसलिट की शुरूआत हरियाणा में 1857 की क्रान्ति के बाद हुई। 1876 में इस समाचार पत्र का सिविल एंड मिलिट्री गजट में विलय हो गया और यह लाहौर से प्रकाशित होने लगा। इससे पहले शसिविल एंड मिलिट्री गजट शिमला से प्रकाशित होता था। मफसलिट की शुरुआत 1845 में आगरा से हुई थी परन्तु कुछ वर्षों बाद यह समाचार पत्र अंबाला से प्रकाशित होने लगा। हरियाणा में प्रिंट मीडिया के विकास का उल्लेख करने के लिए पिछली शताब्दी मे तत्कालीन पंजाब के क्षेत्र को आधार मानकर चलना पड़ेगा। केशवानंद ममगाई के अनुसार हरियाणा का सर्वप्रथम पत्र हाने का श्रेय जैन प्रकाश को है। जिसका पहला अंक 14 नवंबर 1884 को प्रकाश में आया। श्री जीयालाल जैन हरियाणा के (प्रथम) संपादक थे और उन्होंने 1884 से 1891 तक तीन पत्र निकाले। यह मासिक पत्र था जो बाद में पाक्षिक हो गया था। हिन्दी में इसकी 86 प्रतिया छपती थीं। जैन प्रकाश जैन मत का प्रबल पक्षधर पत्र था और लगता है कि उसके ग्राहक भी अधिकतर जैन मतानुयायी ही थे। यह मासिक पत्र था जो फर्रुखनगर (गुड़गांव) से प्रकाशित होता था। जैन प्रकाश उर्दू और हिन्दी में प्रकाशित होता था। चन्द्रकान्ता सूद ने

भी पंजाब की पत्रकारिताः उसका उद्भव और विकास में सरसरी तौर पर इस पत्र के निकलने का उल्लेख किया है। जीयालाल प्रकाश समाचार पत्र का प्रारम्भ दिसंबर 1887 में हुआ था। जीयालाल प्रकाश को जैन प्रकाश का भाई बताया गया है और इस मासिक पत्र के संपादक भी जीयालाल जैन ही थे। जैन प्रकाश और जीयालाल प्रकाश काशी से लीथो प्रेस पर छपते थे। इनमें जैन मत सम्बन्धी समाचारों के साथ–साथ अन्य घटनाओं से सम्बन्धित समाचार एवं लेख भी होते थे। गुड़गांव से ही 1889 में जाट समाचार पत्र प्रकाशित हुआ, पत्र के संपादक बाबू कन्हैया लाल सिंह थे। यह मासिकं पत्र विद्याविलास प्रेस आगरा से छपता था।

हरियाणा के प्रिंट मीडिया के विकास में एक और समाचार पत्र खैर सन्देश का नाम आता है, जो 1889 में अम्बाला से प्रकाशित हुआ था। पत्र के संपादक प्रसिद्ध कांग्रेसी बाबू मुरलीधर थे। उर्दू भाषा में प्रकाशित होने वाले इस साप्ताहिक पत्र ने हरियाणा की पत्रकारिता पर अमिट छाप छोड़ी। बीच में एक ऐसा अतराल भी आया जब हरियाणा से समाचार पत्र प्रकाशित होने का उल्लेख नहीं मिलता। इस अंतराल के बाद पहला पत्र संदेश पं. नेकीराम शर्मा ने भिवानी से निकाला। राष्ट्रीय आन्दोलन को गति देने के लिए इस पत्र को कभी पाक्षिक, कभी साप्ताहिक और कभी दिल्ली से निकाला जाता था। यह पत्र दो साल चलकर बंद हो गया। स्वतंत्रता आन्दोलन गति पकड़ने लगा था और महात्मा गांधी का देश के राजनीतिक पटल पर आगमन हो चुका था। परिणामस्वरूप हरियाणा से भी हजारों लोग स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। इस कालक्रम में रोहतक से 1916 में जाट गजट और 1923 में हरियाणा तिलक का प्रकाशन हुआ। 'जाट गजट' सर छोटूराम द्वारा निकाला गया जबकि हरियाणा तिलक प. श्री राम शर्मा द्वारा निकाला गया। 'हरियाणा तिलक' पत्र ने स्वतंत्रता आन्दोलन और कांग्रेस पार्टी की मुहिम को लोगों तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता के बाद का विकास

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश का विभाजन होने के साथ–साथ पंजाब का भी विभाजन हो गया। लाहौर को हिन्दी के क्षेत्र अथवा उपनिवेश मानते थे। लाहौर के पाकिस्तान में चले जाने के बाद वहां से उर्दू में प्रकाशित श्प्रताप, शमिलाप और वीर भारत पत्र जालंधर से प्रकाशित होने लगे। हिन्दी के राष्ट्रभाषा घोषित होने से हिन्दी के समाचार पत्रों के विकास के लिए नए द्वार खुले।1948 में हिसार से ज्ञानोदय (साप्ताहिक) को पुनः प्रकाशित किया गया, इससे पहले 1907 में हिसार से ही इसके प्रथम दो अंक निकले थे। पत्र के संपादक पं मनुदत शर्मा थे। 1926 से लाहौर से प्रकाशित होने वाला आर्य प्रतिनिधि सभा का पत्र आर्य (साप्ताहिक) विभाजन के बाद अम्बाला स प्रकाशित होने लगा। 1950 में रंगीला मुसाफिर प्यारेलाल शर्मा के संपादकत्व में प्रकाशित हुआ। 1950 में हिसार से अमर ज्योति (मासिक) पत्रिका का श्री गणेश हुआ। पत्रिका के संपादक थे सहीराम जोहर। सहीराम जोहर हिसार से प्रकाशित पत्र 'कर्मयुग' व हरियाणा संघ के संस्थापक संपादक भी रहे हैं। उन्हें पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए लाइफ टाइम एचिवमेंट एवॉर्ड से पुरकृत भी किया जा चुका है।

हिसार से ही सेठ महेश चन्द्र बीए ने 1950 को हरियाणा संदेश का प्रकाशन शुरू किया। हरियाणा में आर्य समाज का काफी प्रभाव रहा है। गुरूकुलों से पत्र निकले। इस कड़ी में 1953 में गुरुकुल झज्जर से भगवान देव आचार्य ने श्सुधारकश पत्र का प्रकाशन शुरू किया। आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार और संस्कृत तथा हिन्दी को बढ़ावा देना सुधारक का मुख्य उद्देश्य है। वास्तव में सुधारक का स्वर सुधारवादी रहा है। 1953 में ही हिसार से वक्त की आवाज निकला और सम्पादक थे

किशनलाल गुप्ता। इसमें सामाजिक प्रसंग तथा समाचारों को शामिल किया जाता था। इसी दौरान गुड़गांव से मेवात नामक दैनिक पत्र और करनाल से 'जन्मभूमि साप्ताहिक' पत्र छपना शुरू हुए।

हरियाणा के अलग राज्य बनने के बाद विकास

भाषा के आधार पर पंजाब का बंटवारा हुआ और 1 नवंबर 1966 को हरियाणा अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। हरियाणा के अलग राज्य बनने के बाद विभिन्न क्षेत्रों में विकास के नए आयाम छुए लेकिन राज्य में पत्रकारिता का विकास अपेक्षित स्तर पर नहीं पहुंच पाया। विकास के इस युग में लोकतंत्र का चौथा स्तन सुदृढ़ नहीं हो पाया। पत्रकारिता की अच्छी फसल के लिए यहां की धरती उर्वर नहीं दिखाई दी। दैनिक पत्र पत्रकारिता के अनिवार्य अंग हैं, वे ही पनप नहीं पाए। किसी ने चतुर्थ स्तंभ की रक्षा के लिए चिंता नहीं की। हरियाणा अपनी स्थापना के तीन दशक बाद तक अपनी माटी की गंध से किसी प्रभावशाली पत्र को जन्म नहीं दे सका। हरियाणा से कई दैनिक पत्र निकले लेकिन वे स्थानीय पत्र ही बनकर रह गए।पत्रकारिता के क्षेत्र में पिछड़ने का मुख्य कारण दिल्ली, चंडीगढ़ और जालन्धर से प्रकाशित किए जाने वाले समाचार पत्रों की हरियाणा में लोकप्रियता रही है। हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, हिन्दी मिलाप, वीर प्रताप, ट्रिब्यून, पंजाब केसरी जैसे स्थापित समाचार पत्रों के सामने किसी भी हरियाणा के समाचार पत्र का टिकना संभव नहीं हो सका। व्यापक साधन सम्पन्नता वाले बड़े मीडिया समूह के इन समाचार पत्रों ने हरियाणा में काफी समय तक पत्रकारिता का कोई बड़ा पौधा नहीं पनपने दिया। पर्याप्त पाठक संख्या होने के बावजूद प्रदेश में 20वीं शताब्दी के अन्तिम दशक तक कोई दैनिक समाचार पत्र नहीं पनप पाया। हालांकि कई समाचार पत्रों का प्रकाशन शुरू हुआ. लेकिन वे लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाए और स्थानीय पत्रों के रूप में ही अपनी पहचान बना सके।इसके बावजूद हरियाणा की पत्रकारिता के क्षेत्र में कुछ सार्थक प्रयास किए गए। 1966 में जालंधर से प्रकाशित वीर प्रताप ने अम्बाला छावनी से अपना हरियाणा संस्करण

शुरू किया, जिसमें हरियाणा के समाचारों को प्रमुख स्थान मिला। आर्थिक कारणों की वजह से 1970 में यह बंद हो गया। 1970 में चंडीगढ़ से प्रकाशित हरियाणा पत्रिका दैनिक का प्रारम्भ हुआ, लेकिन सरकारी संरक्षण में चलने वाला यह पत्र निर्भीकता तथा निष्पक्षता कायम नहीं रख सका और 1972 में बद हो गया। वामपंथी विचारों का पत्र राजधर्म (साप्ताहिक) 1968 में रोहतक से निकला जो 1975 में दैनिक हो गया। स्वामी अग्निवेश इसके संचालक संपादक थे। उत्तर भारत का प्रमुख अंग्रेजी समाचार पत्र ट्रिब्यून 12 मई 1948 को अम्बाला से प्रकाशित होने लगा। लाहौर से प्रकाशित होने वाले इस पत्र को भी देश विभाजन का दंश झेलना पड़ा। दंगों के दौरान 40 दिन तक इसका प्रकाशन बंद रहा। बाद में शिमला से इसका प्रकाशन शुरू हुआ तथा इसके बाद अम्बाला से ट्रिब्यून का प्रकाशन हुआ। 25 जून 1969 से ट्रिब्यून का प्रकाशन चंडीगढ़ से किया जा रहा है।हरियाणा में दैनिक समाचार पत्र निकालने के कुछ और सार्थक प्रयास किए गए। करनाल से शविश्व मानव और गुड़गांव से प्रकाशित श्जन संदेश इस कड़ी में उल्लेखनीय समाचार पत्र है, परन्तु ये दैनिक समाचार पत्र अधिक समय तक टिक पाने में असमर्थ रहे। 1975 में देश में आपातकाल लागू होने के बाद हरियाणा की आवाज और श्चेतना समाचार पत्रों को लोकतन्त्र की आवाज उठाने की सजा मिली और वे बंद हो गए। आपातकाल हटने के बाद चेतना ही पुनः शुरू हो पाया। आपातकाल हटने के बाद हरियाणा में जिला स्तरीय अखबारों का काफी संख्या में प्रकाशन हुआ, इनमें अधिकतर पत्र पाक्षिक और साप्ताहिक थे। हरियाणा में पत्रों की संख्या में बढोतरी तो हुई लेकिन उनके स्तर में खास सुधार नहीं हो पाया। इस दौर में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में 'ससार केसरी, नीलोखेड़ी टाइम्स, 'पिछड़ी दुनिया, स्वतंत्र मार्ग', हरियाणा मुद्रिका,

टोहाना केसरी, तोशाम केसरी और देकवर्ड शिलका मुख्य है। हरियाणा में ज्यादातर समाचार पत्रों के सम्पादक खुद ही संचालक और मालिक रहे हैं तथा कई मुद्रक व प्रकाशक भी स्वयं ही रहे हैं।

हरियाणा में व्यक्तिगत कारणों और समाज सेवा की भावना के मध्यनजर समाचार पत्र निकालने का कार्य शुरू तो किया गया लेकिन आर्थिक मुश्किलों के चलते इनका निर्वाध प्रकाशन जारी नहीं रखा जा सका। अक्सर इसी कारण ही समाचार पत्रों को असमय मर जाने के लिए बाध्य होना पड़ता। ग्राहक संख्या कम होने के कारण अधिकतर पत्रों को मुफ्त बांटना पड़ता था। आज भी लघु समाचार पत्रों की हालत हरियाणा में कमोवेश ऐसी ही है। कई घुट–पुट दैनिक लघु रूप में निकल रहे हैं किन्तु इनमें से कुछ का उद्देश्य विज्ञापन बटोरना है, पत्रकारिता तो बहाना मात्र है।

'हरियाणा में वर्तमान में प्रिंट मीडिया'

दैनिक भास्कर

दैनिक भास्कर तेजी से बढ़ता बड़ा समाचार पत्र है और इस पत्र ने हरियाणा की पत्रकारिता को नई दिशा दी है। हरियाणा में इस पत्र का प्रकाशन 4 जून 2000 को शुरु हुआ और यह पानीपत और हिसार से एकसाथ मुद्रित तथा प्रकाशित होता है। क्षेत्रीय संस्करणों, उच्च तकनीक और कुशल प्रबंधन के कारण इस समाचार पत्र ने हरियाणा के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में व्यापक पहुंच बनाई है। 12 पृष्ठ वाले इस समाचार पत्र का हरियाणा में काफी तेजी से विस्तार हुआ है। जिला स्तर पर अलग से चार पृष्ठ का परिशिष्ट प्रकाशित करके पत्रकारिता को शहर से ग्रामीण उन्मुख (टपससंहम व्तपमदजमक) बना दिया है। हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में इस पत्र ने अपनी अलग पहचान बनाई है और हिन्दी के अन्य समाचार पत्रों को समाचार प्रबंधन के लिए प्रभावी रणनीति बनाने को मजबूर कर दिया है। पानीपत, हिसार और फरीदाबाद से इसके क्षेत्रीय संस्करण प्रकाशित होते हैं। समाचार पत्रों की सामग्री, प्रस्तुतिकरण, ले आउट और भाषा शैली की दृष्टि से यह पत्र बेजोड़ है।

'दैनिक जागरण'

हरियाणा में दैनिक जागरण समाचार पत्र का प्रकाशन हिसार से 20 जुलाई 1999 को और पानीपत से 25 जुलाई 2003 से आरंभ हुआ। दैनिक जागरण पत्र भी जिला स्तर पर आधारित चार पृष्ठों का अलग परिशिष्ट प्रकाशित करके समाचारों की स्थानीय प्रवृति को खास महत्व देता है। हिन्दी का सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला अखबार दैनिक जागरण का आरम्भ 1947 में कानपुर में हुआ था। इस पत्र का प्रकाशन का श्रेय पूर्णचन्द गुप्ता को दिया जाता है। नरेन्द्र मोहन के संपादन समय में दैनिक जागरण ने सफलता के नए आयाम छुए। इस पत्र के संस्करण इस समय हरियाणा समेत कई राज्यों से समानान्तर निकाले जा रहे हैं। देश के दस सर्वाधिक पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में इस पत्र का भी नाम है। 12 पृष्ठीय यह समाचार पत्र भी प्रत्येक जिलेवार रंगीन परिशिष्ट प्रकाशित करता है। राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आपराधिक और जिले में होने वाले अन्य क्रिया–कलापों सम्बन्धित समाचारों को पर्याप्त स्थान इन परिशिष्टों में मिलता है। स्थायी स्तंभ में राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय फीचर अर्थजगत् खेलकूद, विविध आदि लिए जाते हैं।

'पंजाब केसरी'

पंजाब केसरी समाचार पत्र अम्बाला, पानीपत और हिसार से प्रकाशित किया जा रहा है। हरियाणा में इस पत्र की शुरूआत 1991 में अम्बाला से हुई थी। यह पत्र भी जिला आधारित क्षेत्रीय संस्करण संस्करण प्रकाशित कर रहा है और शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी अच्छी प्रसार संख्या है। इसको आम आदमी का समाचार पत्र कहा जाता है. इसमें मसालेदार व पेज थी खबरें खास आकर्षण होती है। पंजाब केसरी समाचार पत्र को 1965 में लाला जगत नारायण ने जालंधर से शुरू किया था। इस पत्र के मालिकों को पंजाब में आतंकवाद के दौर में भारी खामियाजा भुगतना पड़ा तथा लाला जगत नारायण को उग्रवादियों की गोली का निशाना बनाया गया। हिन्दी के समाचार पत्रों में पंजाब केसरी की अपनी अलग पहचान है और इसके लक्षित पाठक वर्ग भी दूसरे समाचार पत्रों से अलग हैं। इस पत्र का प्रकाशन दिल्ली से भी होता है, जिसके मालिक संपादक अश्विनी कुमार है।

'दैनिक ट्रिब्यून'

ट्रिब्यून ट्रस्ट द्वारा संचालित दैनिक ट्रिब्यून समाचार पत्र का प्रकाशन 1978 को चण्डीगढ़ से शुरू हुआ। अग्रेजी का दी ट्रिब्यून और पंजाबी का दैनिक ट्रिब्यून इसके सहयोगी समाचार पत्र हैं और ट्रिब्यून ट्रस्ट द्वारा ही संचालित है। अग्रेजी के समाचार पत्र दी ट्रिब्यून (जेम ज्तपइनदम) का प्रकाशन 1881 में सरदार दयाल सिंह मजीठिया ने लाहौर से शुरू किया था। देश का विभाजन होने के बाद दी ट्रिब्यून का प्रकाशन शिमला से होने लगा तथा 1948 में इसका अम्बाला से प्रकाशन शुरू किया गया। वर्तमान में यह चण्डीगढ़ से प्रकाशित हो रहा है और इसके क्षेत्रीय संस्करण जालघर, बठिंडा और नई दिल्ली से प्रकाशित किए जा रहे हैं। हिन्दी का समाचार पत्र दैनिक ट्रिब्यून हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और चण्डीगढ़ का लोकप्रिय पत्र है. इसकी निष्पक्षता व निर्भिकता को सभी स्वीकार करते हैं। यह समाचार पत्र हरियाणा के लिए अलग संस्करण प्रकाशित कर रहा है जिसमें प्रदेश की राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और अन्य क्रिया–कलापों को पर्याप्त स्थान दिया जाता है। दैनिक ट्रिब्यून में नियमित स्तम्भों से अलग रविवार को रविवारीय पत्रिका का प्रकाशन होता है जिसमें साहित्यिक गतिविधियों, कविता, कहानी आदि को शामिल किया जाता है। शनिवार को मनोरंजन पत्रिका प्रकाशित की जाती है जिसमें फिल्मों से सम्बंधित सामग्री दी जाती है। इस पत्र पर भी क्षेत्रीय या जिला आधारित समाचारों के ज्यादा प्रकाशन का दबाव बढ़ा है। वर्तमान में दैनिक ट्रिब्यून के संपादक नरेश कोशल है।

'अमर उजाला'

अमर उजाला हरियाणा के महत्वपूर्ण समाचार पत्रों में से एक है। इस समाचार पत्र का प्रकाशन 18 अप्रैल 1948 को आगरा से डोरीलाल अग्रवाल और मुरलीलाल माहेश्वरी के संपादकत्व मे शुरू हुआ था। जब यह शुरू हुआ तब चार पृष्ठ का समाचार पत्र था और पत्र की प्रसार संख्या 2576 कॉपी थी। आज यह उत्तर भारत का प्रमुख समाचार पत्र है और कई राज्यों से इसके संस्करण सफलतापूर्वक निकल रहे हैं। हरियाणा को इसके नोएडा और पंचकूला से प्रकाशित संस्करण कवर कर रहे हैं। वर्तमान में इस समाचार पत्र के मुख्य संपादक गोविंद सिंह और पंचकूला संस्करण के संपादक उदय कुमार हैं। इस पत्र की कवरेज और संपादकीय सामग्री होती है तथा इस दृष्टि से यह दूसरे समाचार पत्रों पर भारी पड़ता है। यह समाचार पत्र जिला निर्धारित संस्करण नहीं निकालता और कुछ संस्करणों में ही प्रदेश भर की व्यापक कवरज इसमें होती है। यह 16 पेज का अखबार है और इसके नियमित स्तंभों में देश–देशांतर, देश–प्रदेश, संपादकीय, हरियाणा, यूथ एक्सप्रेस, बिजनेस मंत्र, प्रदेश, स्पोर्टस तथा दुनिया

डॉट काम इत्यादि होते हैं। किसी भी विषय पर व्यापक और स्तरीय कवरेज के लिए इस पत्र का हिन्दी के समाचार पत्रों में खास स्थान है। राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, देश की ज्वलंत समस्याओं व सामयिक मुहीं पर यह समाचार पत्र सबसे ज्यादा तथा स्तरीय सामग्री प्रकाशित करता है।

'हरिभूमि'

हरियाणा की माटी से निकलने वाले एकमात्र अखबार हरिभूमि ने प्रदेश को हिन्दी पत्रकारिता में जो स्थान बनाया है, वह बेजोड़ है। इस बात की कमी हमेशा खलती रहती थी कि हरियाणा कर कोई अपना समाचार पत्र नहीं है. इस कमी को हरिभूमि ने पूरा कर दिया है और यह प्रदेश के आम आदमी की आवाज को बुलंद कर रहा है। हरिभूमि का प्रकाशन 5 सितंबर 1996 को रोहतक से शुरू हुआ, इसके अतिरिक्त यह रायपुर बिलासपुर (छत्तीसगढ़) जबलपुर (मध्यप्रदेश) तथा दिल्ली से भी प्रकाशित हो रहा है। यह समाचार पत्र हरियाणा के सरोकारों को प्रमुखता से उठा रहा है। इस पत्र के नियमित स्तंभों में देश इन्द्रधनुष, विचार पक्ष कारोबार खेल और हरियाणा को रखा जाता है। हरिभूमि 10 पेज के मूल अखबार के साथ जिला या क्षेत्रीय परिशिष्ट प्रकाशित करता है, जो बार पैज के होते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयों से सम्बंधित सामग्री और हरियाणवी जन–जीवन से जुड़े शोधपरक लेखों को पर्याप्त स्थान दिया जाता है। इस पत्र में रविवार को रविवार भारती, मंगलवार को सहेली शनिवार को रंगारंग और बालमूगि परिशिष्टों का प्रकाशन होता है, जिसमें विभिन्न विषयों के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है तथा उपयोगी लेखों का प्रकाशन होता है। इस समय हरिभूमि रोहतक संस्करण के संपादक ओमकार चौधरी है।

'अभी अभी'

अभी अभी समाचार का प्रकाशन 25 अक्टूबर 2008 को हरियाणा से शुरू हुआ और वर्तमान में यह रोहतक, हिसार व करनाल से प्रकाशित हो रहा है। यह पत्र हिन्दी सांध्य दैनिकों के लिए आदर्श प्रस्तुत कर रहा है। अभी–अभी फुल साइज का समाचार पत्र है और राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय घटनाओं के साथ–साथ क्षेत्रीय कवरेज व्यापक रूप से कर रहा है। यह अखवार सुबह और शाम दोनों वक्त निकाला जा रहा है, जो हरियाणा में अपनी तरह का अनूठा प्रयोग है। यह दस पृष्ठ का रंगीन समाचार पत्र है और इसकी छपाइ व लेआउट बड़े समाचार पत्रों से किसी भी दृष्टि से कमतर नहीं है। रविवार को यह समाचार पत्र बारह पृष्ठ का होता है। इस पत्र के मुख्य संपादक और सीएमडी कुलदीप श्योराण है और यह पत्र प्रदेश का सबसे बड़ा हिन्दी सांध्य दैनिक का दावा करता है। इसके प्रथम पृष्ठ पर राष्ट्रीय व प्रदेश की महत्वपूर्ण खबरें पृष्ठ दो पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खबरें, पृष्ठ तीन पर प्रदेश की खबरें चार नम्बर पृष्ठ पर चंडीगढ़ की खबरें 56.78 पृष्ठों पर संस्करण के हिसाब से स्थानीय खबरें होती है। पृष्ठ नो पर खेल व अर्थ तथा पृष्ठ 10 पर विविध सामग्री का प्रकाशन होता है।

'सच कहू'

सच कहू मंझौला समाचार पत्र है और यह धार्मिक संस्था डेरा सच्चा सौदा सिरसा का मुखपत्र है। इस पत्र की शुरूआत 11 जून 2002 को सिरसा से हुई थी और शाह सतनाम जी एजुकेशनल एवं वेलफेयर सोसायटी इसको प्रकाशित करती है। यह आठ पृष्ठ का रंगीन पत्र है और इसके प्रथम पृष्ठ पर राष्ट्रीय समाचारों को स्थान दिया जाता है। पत्र के अन्य पृष्ठो पर हरियाणा से सम्बन्धित सामग्री खबरें दी जाती है और यह राष्ट्रीय खबरों के लिए न्यूज एजेंसी वार्ता से खबरें लेता है। सच कहूं का ब्लाक स्तर

से जिला स्तर तक रिपोर्टरों का नेटवर्क है जो प्रदेश भर की खबरे कवर करते हैं। यह पत्र वर्तमान में सिरसा और दिल्ली से प्रकाशित किया जा रहा है और इसके संपादक गुरदास सिंह सलवारा हैं। पहले यह समाचार पत्र पाक्षिक पत्र के रूप में प्रकाशित किया जाता था। सच कहूं 26 अप्रैल 2003 से अपना पजाबी संस्करण भी सिरसा से निकाल रहा है।

'जगत क्रान्ति'

प्रदेश के स्तर पर जगत क्रान्ति समाचार पत्र 13 अप्रैल 2007 हो शुरू हुआ। यह पत्र नोएडा से मुदित होता है और जीन्द से प्रकाशित होता है। पहले यह जीन्द से प्रकाशित होता था और जिला स्तर पर इसका प्रकाशन होता था। श्जगत क्रान्ति पत्र की शुरूआत 1979 में तिलकराज भाटिया ने की थी और वर्तमान में इस पत्र के संपादक अरूण भाटिया है। इस समाचार पत्र के पास जिला व ब्लाक स्तर पर रिपोर्टरों का नेटवर्क है। यह ब्राडशीट पर प्रकाशित होता है तथा 10 पृष्ठों का रगीन समाचार पत्र है। समाचार पत्र का मूल्य एक रूपया है, लेआउट तथा प्रिटिंग स्तरीय है। मूलतः यह पत्र हरियाणा की खबरों को ही प्राथमिकता से प्रकाशित करता है लेकिन पृष्ठ एक पर राष्ट्रीय महत्व के समाचारों को भी पर्याप्त स्थान देता है। यह एजेंसी की खबरें भी प्राप्त करता है। जगत क्रान्ति में धर्म, शिक्षा, राजनीति, संस्कृति से सम्बन्धित विविध प्रकार की पर्याप्त सामग्री प्रकाशित की जाती है।

'नभछोर'

नभछोर साध्य दैनिक समाचार पत्र की शुरुआत 15 जनवरी 1985 को हिसार से हुई। इस पत्र ने हरियाणा में अपनी अलग से पहचान बनाई है और वर्तमान में यह हिसार से मुद्रित एवं प्रकाशित हो रहा है। यह रंगीन समाचार पत्र है और आत कालम में प्रकाशित होता है। इस समय नमछोर के संपादक एवं मालिक ऋषि सैनी है। इस पत्र का प्रथम एवं अन्तिम पृष्ठ रंगीन प्रकाशित होता है। इस पत्र के प्रथम पृष्ठ पर राष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तर के समाचार होते हैं। यह पत्र एजेंसी से भी खबरें प्राप्त करता है स्थानीय स्तर पर इसका अपने संवाददाताओं का नेटवर्क है। नमछोर काकार्टून जो प्राय प्रथम पृष्ठ पर होता है. चुटकी और सामयिकता के लिए प्रसिद्ध है।

'दा होम पेज'

द होम पेज समाचार पत्र हिसार से प्रकाशित होता है और भिवानी की चेतना प्रिंटिंग प्रेस से मुदित हो रहा है। यह प्रदेश का अकेला अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र है और इसके संपादक तथा मालिक शिव भगवान है। इस पत्र की शुरूआत 21 नवंबर 1998 में नमछोर समाचार पत्र के सहयोगी प्रकाशन के रूप में की गई थी लेकिन 1999 में भिवानी के चेतना प्रकाशक समूह ने इस पत्र को अधिगृहित कर लिया। यह आठ पृष्ठ का रंगीन तथा ब्राडशीट पर प्रकाशित होने वाला पत्र है। इस समाचार पत्र में हरियाणा की खबरों को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है, जो प्राय प्रथम पृष्ठ पर ही दिए जाते हैं। इसमें राष्ट्रीय महत्व के समाचारों को भी पर्याप्त स्थान दिया जाता है और संपादकीय पृष्ठ पर संपादकीय तथा स्तंभकारों के लेख प्रकाशित होते हैं। मनोरंजन, आर्थिक क्रियाकलापों और देश–विदेश की खबरों को भी इस पत्र में स्थान दिया जाता है। आजकल इस समाचार पत्र के प्रकाशन की स्थितियां अनुकूल नहीं है और यह अपने वजूद के लिए संघर्ष कर रहा है।

'लघु समाचार पत्र'

हरियाणा में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में से लघु समाचार पत्रों का भी काफी हिस्सा होता है। छोटे समाचार पत्र जनमत का निर्माण करने में ज्यादा कारगर भूमिका निभाते हैं। लघु समाचार पत्र केन्द्रित होते हैं इस कारण वे गली–मोहल्लो तथा स्थानीय मुद्दों को ज्यादा प्रभावी ढंग से उठाते हैं। छोटे समाचार पत्रों के दूर–दराज के अंचलों से अधिक नजदीक से जुड़े होने के कारण उन पर आम आदमी की समस्याओं, गरीबी और अभावों से सम्बन्धित मामलों को संजीदगी से उठाकर जनमत को जागृत करने का दायित्व अधिक होता है। ये समाचार पत्र इन दायित्वों का बखूबी निभा रहे हैं।हरियाणा से प्रकाशित लघु समाचार पत्रों में दैनिकों की संख्या 33 है, जिसमें दी अखबार हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में तथा एक अखबार अंग्रेजी में प्रकाशित होता है। इसी प्रकार साप्ताहिकों की संख्या 72 है।

'हरियाणा में पत्रिकाओं और अन्य प्रिंट माध्यमों का विकास'

हरियाणा में सामान्य रुचि की पत्रिकाओं का प्रकाशन सीमित है। हरियाणा में जो पत्रिकाए आ रही हैं. वे प्राय प्रमुख प्रकाशन समूहों द्वारा ही प्रकाशित की जा रही है, प्राय इन प्रकाशन समूहों द्वारा दैनिक समाचार पत्र भी प्रकाशित किए जाते हैं। वहीं कुछ प्रकाशन समूह ऐसे भी है जो केवल पत्रिकाओं का ही प्रकाशन कर रहे हैं। हरियाणा से प्रकाशित की जा रही पत्रिकाओं में कुछ तो वर्ग विशेष की पत्रिकाएं होती है जबकि कुछ विश्लेषित किस्म की पत्रिकाएं। इन पत्रिकाओं में सामान्य जानकारी से भरपूर साप्ताहिक पत्रिका से लेकर विशिष्ट जानकारी वाली सभी पत्रिकाए शामिल की जा सकती हैं। हरियाणा बनने पर लोक सम्पर्क विभाग की ओर से हरियाणा चित्र निकला जो बाद में हरियाणा संवाद में विलीन हो गया। हरियाणा सवाद में विभिन्न विषयों और विशेषकर हरियाणा के बारे में बेजोड सामग्री प्रकाशित होती रही है। शुरू में यह पाक्षिक थी और विवादों के चलते इसका प्रकाशन कुछ साल बंद रहा। वर्तमान में हरियाणा सवाद नए रंग–रूप में निकल रही है और विभिन्न विषयों, जैसे कृषि, खेल और शिक्षा आदि से सम्बन्धित विशेष संस्करण भी निकाले जा रहे हैं। लेकिन सरकारी प्रचार के लिए निकाली जा रही इस पत्रिका की अपनी सीमाएं हैं। वहीं हरियाणा रिव्यू सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग द्वारा निकाली जा रही पत्रिका का अंग्रेजी संस्करण है और संभवतः अंग्रेजी के पाठकों तक सरकारी प्रचार के लिए प्रकाशित की जा रही है। हालाकि कई मौकों पर इन दोनों पत्रिकाओं में स्तरीय और मौलिक जानकारी भी मिलती है। इसी प्रकार सत्य एक्सप्रेस हरियाणा की एक अच्छी पत्रिका थी, जो कुछ महीनों पहले दुर्भाग्यवश बंद हो गई है। हरियाणा के कृषि प्रधान राज्य होने के कारण यहां से कृषि बागवानी और पशुधन से सम्बन्धित कई अच्छी पत्रिकाए निकल रही है। हिसार से प्रकाशित हरियाणा एग्रीकल्चर खेती–बाडी से सम्बन्धित जानकारी देने वाली प्रमुख पत्रिका है। वहीं करनाल से प्रकाशित पत्रिका कृषि सूत्र है. जो हिन्दी–अंग्रेजी की मासिक पत्रिका है। यह पत्रिका किसानों और कृषि विशेषज्ञों के लिए काफी उपयोगी है। अंग्रेजी में हिसार से प्रकाशित अद्धवार्षिक करोप रिसर्च पत्रिका भी स्तरीय है।

'अन्य प्रिंट माध्यम'

भूमंडलीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के कमिान दौर में मुदित माध्यमों की उपयोगिता तथा प्रासंगिकता कायम है। प्रिंट माध्यमों में समाचार पत्र–पत्रिकाओं के अलावा पुस्तके, पोस्टर, लीफलेट, फोल्डर ब्रोशर, पंफलेट और भित्तिचित्र आदि प्रिंट माध्यम जनसंचार के सशक्त माध्यम है। ये माध्य सूचना और मनोरंजन करने के साथ–साथ उपयोगी पठनीय सामग्री जुटाते हैं। इन माध्यमों का प्रसार हालांकि समाचार पत्रों

और पत्रिकाओं से कम हो सकता है जबकि एक माध्यम के रूप में इनकी उपयोगिता कम नहीं है। ये माध्यम समाज के सभी वर्गों, महानगरीय शहरी व ग्रामीण सभी के लिए लाभदायक है।पुस्तकें ज्ञान, शिक्षण का सबसे विस्तृत व टिकाऊ स्त्रोत होने के कारण संवेदनशीलता और विवेचन सामर्थ्य को को गति देती है। ये शिक्षण कार्यक्रमों, औपचारिक तथा अनऔपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रचनात्मक भूमिका निभाती है। संचार और सूचना के संदर्भ में पुस्तकों की भूमिका कारगर, प्रासंगिक और लाभप्रद है। निजी प्रकाशकों के अलावा पुस्तकों का प्रकाशन प्रदेश सरकारें, केन्द्र सरकार का प्रकाशन विभाग, एनसीईआरटी, केन्द्र व राज्यों की साहित्यिक अकादमियों के प्रकाशन, केन्द्र व राज्य सरकारों के लोक संपर्क विभाग पुस्तकों का प्रकाशन करते हैं।पुस्तकों के अतिरिक्त केन्द्र व राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों, विश्वविद्यालयों कॉलेजों, पर्यटन एजेसियों और विभिन्न संस्थानों द्वारा ब्रोशर, पफलेट, पोस्टर, कलेंडर, फोल्डर, पापुलर मैग्जीन आदि प्रकाशित करती है। पंफलेट सबसे ज्यादा प्रचलित और विशाल क्षेत्र वाला माध्यम है। सूचनाओं और संदेशों को सामान्य लोगों तक पहुंचाने के लिए इसमें संदर्भों की बहुलता रहती है। शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी तथा गैर–सरकारी एजेंसिया लोगों को सूचित करने के लिए पंफलेटों का उपयोग करती हैं। पंफलेट रंग–बिरंगे कागज और आकर्षक रूप में मुद्रित कराकर लोगों तक पहुंचाए जाते हैं। अखबारों में प्रकाशित विज्ञापनो की अपेक्षा इन पंफलेटों का महत्व कम नहीं है और ये जनसंचार का महत्वपूर्ण अंग हैं।

फोल्डर को लघु पत्रिका भी कहा जा सकता है और इसका विषय कुछ भी हो सकता है। यह एक प्रकार से आकर्षक भाषा में लिखा बड़ा परचा होता है, जो किसी का मन जीतने के लिए लिखा जाता है। फोल्डर किसी संस्था, कंपनी, सरकार और राजनैतिक दल द्वारा किसी जनसमुदाय के लिए लिखा जाता है। फोल्डर हरियाणा में विभिन्न संस्थानों, सरकारी व गैरसरकारी कार्यों की जानकारी लोगों तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है। इस माध्यम का सबसे अधिक लाभ पर्यटन विभाग को होता है। इसी प्रकार हरियाणा में पोस्टर प्रचार व जनसंचार का प्रबल माध्यम है। बड़ी बात को कम शब्दों में कहना ही पोस्टर की सबसे बड़ी विशेषता है। हरियाणा में चुनाव व किसी आयोजन के समय, व्यापारिक कंपनियों द्वारा, फिल्मों से सम्बन्धित क्रिया–कलापों आदि का प्रचार पोस्टर के जरिये किया जाता है। जन स्वास्थ्य, साक्षरता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक चेतना, भ्रूण हत्या, महिलाओं का विकास, भूमि सुधार आदि परिपेक्ष्यों में पोस्टर जनमानस तैयार करने में कारगर भूमिका निभाते हैं। विकास सम्बन्धी कई योजनाओं की सूचना पोस्टर के माध्यम से नागरिकों को दी जाती है।

'हरियाणा के प्रिंट मीडिया में मविष्य के रुझान'

पिछले डेढ दशक में हरियाणा में प्रिंट मीडिया के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुए है। यहां से कई बड़े मीडिया घरानों ने अपने क्षेत्रीय संस्करणों का प्रकाशन शुरु किया है। हरियाणा की माटी की गध लिए हुए हरिभूमि हरियाणा के सरोकारों को राष्ट्रीय स्तर पर वागी दे रहा है। प्रिंट मीडिया के क्षेत्र में काफी समय तक हरियाणा पिछड़ा रहा क्योंकि दिल्ली और चंडीगढ़ प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों ने प्रदेश में किसी समाचार पत्र को साधनों और पाठक संख्या के बल पर टिके रहने नहीं दिया। 20वीं सदी के अन्तिम दशक में इस परिदृश्य में परिवर्तन आया और अमर उजाला, दैनिक भास्कर और दैनिक जागरण मीडिया समूहों ने अपने क्षेत्रीय संस्करणों का प्रकाशन हरियाणा से शुरू किया। 1996 में हरियाणा का पहला समाचार पत्र हरिभूमि, जिसने हरियाणा के साथ–साथ दूसरे राज्यों में भो अपनी कामयाबी का परचम लहराया है। वर्तमान में प्रदेश के समाचार पत्रों का आकलन करके भविष्य के कुछ रुझानों का अंदाजा लग जाता है कि इस क्षेत्र में किस तरह के परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं।

क्षेत्रीय संस्करणों का प्रचलन जिस तेज गति से बढ़ रहा है, यह संभक्त भविष्य में भी रुकने या मंद होने वाला नहीं है। संचार साधनों के कारण समाचार पत्रों का विकेन्द्रीकरण और तेजी से होगा। इस प्रक्रिया में बड़े दैनिक महानगरों ने निकल कर छोटे शहरों की राह पकड़ रहे हैं। क्षेत्रीय या जिला स्तर पर प्रकाशित परिशिष्ट की हैसियत भविष्य में इन क्षेत्रा में स्वतंत्र समाचार पत्रों जैसी हो सकती है। अब क्षेत्रीय आधार पर जो परिशिष्ट निकाले जा रहे हैं उनमें विज्ञप्तियों और ज्ञापनों पर आधारित समाचार आधे से ज्यादा होते हैं भविष्य में इस तरह के समाचारों का प्रतिशत और बढ़ने के व्यवस्थाएं चलती है। समाचार पत्रों में खबरें प्रकाशित करने की होड़ के बीचव यह ध्यान रखना जरूरी है कि समाचार पुखार विस्तृत तथ्यों पर अधारित और विश्वसनीय हो। तान शर्मा का इस राम्जना में कयन उल्लेखनीय है, प्रतिदिन जो अखबार तैयार होता है, उसमें सैकड़ों–हजारों संवाददाताओं का परिश्रम लगा होता है, वह सारी टीम का सामूहिक प्रवास होता है। अखबारों के अपने संवाददाताओं के अलावा न्यूज एजेंसियां भी अखबारों की खबरों की पूर्ति करती है और उनके संवाददाताओं का भी प्रदेश, देश–विदेश में सभी ओर जाल विधा होता है। खबरें जुटाने के लिए उन्हें बहत परिश्रम करना पड़ता है। हरियाणा प्रदेश में हिन्दी समाचार पत्रों का बढ़ता प्रभुत्व बढ़ती पाठक संख्या से जोड़कर देखा जा सकता है। ग्रामीण–कस्बों में साक्षरता दर तेजी से बढ़ने से पिछड़ी समझी जाने वाली जातियों में राजनीतिक चेतना का उभार और अखवार को बांटकर पढ़ने की प्रवृति आदि भी ऐसे कुछ कारण हैं जिनसे समाचार पत्रों की पाठक संख्या में काफी वृद्धि हुई है।

अन्य प्रिंट माध्यम पुस्तकें, पोस्टर, ब्रोशर, पम्फलेट, फोल्डर, लीफलेट इत्यादि हरियाणा में जनसंचार के सशक्त माध्यम हैं। ये माध्यम सूचनाएं देते हैं, मनोरंजन करते हैं और उपयोगी पठनीय सामग्री जुटाते हैं तथा भविष्य में भी इन माध्यमों की उपयोगिता व महत्व कम होने वाला नहीं है। ये माध्यम ग्रामीण, शहरी, अभिजात्य व निम्न वर्गों में पहुंच बनाने और अपना उद्देश्य हल करने में कमतर नहीं हैं तथा भविष्य में भी रहेंगे। प्रदेश भर में इन माध्यमों से सरकार अपनी नीतियां, फैसले और सफलताएं लोगों तक पहुंचाती है और भविष्य में भी ऐसा होने की पूरी संभावना है।

इंटरनेट और हिंदी पत्रकारिता का विकास

हरियाणा में इंटरनेट पत्रकारिता के विकास की पूरी संभावनाएं हैं क्योंकि संथान में मुख्यधारा के लगभग सभी समाचार पत्र अपने इंटरनेट निकाल रहे हैं और भविष्य में भी यह ही रुकने वाली नहीं है। प्रदेश के क्षेत्रीय या स्वतंत्र समाचार पत्र भी भविष्य में इंटरनेट तकनीक के जरिये अपना प्रभाव, पहचान और उपयोगिता बढ़ाने की स्थिति में होंगे। प्रदेश के मुख्यधारा के समाचार पत्रों की सामग्री में विविधता और मौलिकता का हास दिखाई दे रहा है। इसलिए अधिकतर समाचार पत्र एक–दूसरे की कॉपी बन गए हैं। भविष्य में भी समाचार पत्रों की प्रतियोगिता कम होने के आसार नहीं है और इनके बीच की विविधता का और हास होगा। संभवत प्रदेश के श्दैनिक मारकर और दैनिक जागरण के बीच का फर्क कम हो जाएगा। भाषा के स्तर पर भी समाचार पत्र एक जैसे दिखाई देते हैं और भविष्य में भी यह स्थिति सुधरने के आसार बहुत कम हैं। हरियाणा के प्रिंट मीडिया में समाचार पत्रों के अलावा पत्रिकाएं भी जनसंचार का सशक्त माध्यम है, भविष्य में भी रहेंगी। 20वीं सदी के अंतिम दशक से हरियाणा में पत्रिकाओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई है और उनकी प्रसार संख्या में भी गुणित वृद्धि हुई है। हरियाणा में ज्यादातर सामान्य रुचि की पत्रिकाएं हैं जो प्रमुख प्रकाशन गृहों द्वारा प्रकाशित होती है तथा इन प्रकाशन गृहों का प्रबंधन एवं संगठन काफी व्यवस्थित होता है। प्रायः ये प्रकाशन गृह दैनिक पत्रों का भी प्रकाशन कर रहे हैं जबकि कुछ प्रकाशन गृह केवल पत्रिकाओं का ही प्रकाशन कर रहे हैं। प्रदेश में

सामान्य रुचि की पत्रिकाओं का अभाव दिखाई देता है. उम्मीद है भविष्य में यह अभाव नहीं रहेगा। हरियाणा से विभिन्न पत्रिकाएं विभिन्न स्थानों से निकली लेकिन साधनों की कमी, अनुभव और निष्ठा के अभाव में इनमें से काफी पत्रिकाएं अपना अस्तित्व नहीं बचा सकी।

यह स्थिति आज भी विद्यमान है और भविष्य में भी रह सकती है। भविष्य में प्रदेश में पत्रिकाएं चाहे अल्प जीवन जीने के लिए ही रहे लेकिन उनके उभरने की प्रवृति चलती रहेगी। यह भी सही लगता है कि जिन पत्रिकाओं के पीछे किसी सस्था का आर्थिक सहयोग, कुशल श्रमिक और निष्ठा हो, उनके अपने उद्देश्य में कामयाब होने की भविष्य में भी पूरी संभावना रहेगी। प्रदेश में हरियाणा का लोकसम्पर्क विभाग, साहित्य अकादमिया और विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी प्रतिष्ठान पत्र–पत्रिकाएं निकालते हैं ताकि हर प्रकार का तालमेल बना रहे। भविष्य में भी इसी तरह से पत्रिकाएं निकलती रहेंगी और अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के प्रयास होते रहेंगे। हरियाणा से प्रकाशित होने वाली लघु पत्रिकाओं ने अपने कथ्य और शिल्प से अपना महत्व जता दिया है और भविष्य में भी इनकी उपयोगिता व प्रासंगिकता कम नहीं होगी। भारी भरकम और साज–सज्जा से युक्त बड़ी पत्रिकाएं इनकी उपेक्षा नहीं कर पाएंगी क्योंकि लघु पत्रिकाएं उस आदमी की आवाज बन चुकी हैं, जो उपेक्षित हैं। हरियाणा की पत्रिकाएं अपने सीमित साधनों से जो अंशदान प्रिंट मीडिया के क्षेत्र में कर रही हैं, उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती और भविष्य में भी ये अपना महत्व कम नहीं होने देंगी।

निष्कर्ष

संक्षेप में इतना कहना ही काफी होगा कि बड़े घरानों के समाचार पत्रों ने विशेषकर हरियाणा राज्य में छोटे अखबारों को पनपने नहीं दिया। जिसके कारण आज इन्हीं बड़े अखबारों के क्षेत्रीय संस्करण पाठकों पर अमिट छाप छोड़ रहे हैं। नई तकनीक और प्रोद्यौगिकी के कारण इन बड़े समाचार पत्र समुहों के मालिकों ने पाठकों तक जल्द अखबार की पहुंच के चलते छापाखानों में भी वृद्धि की है। अकेले हरियाणा में दैनिक भास्कर की बात करें तो आज यह समाचार पत्र हिसार, पानीपत, रोहतक, चंडीगढ़, नोएडा से प्रकाशित हो रहा है, इन छापाखानों से पत्र समूह पूरे हरियाणा के पाठकों तक अपना पत्र पहुंचा रहा है। इसके अलावा दूसरे हिन्दी दैनिक समाचार पत्र भी क्षेत्रीय संस्करणों के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा छापेखाने लगाकर पाठकों तक जल्द अखबार पहुंचाने के लिए सुचारू रूप से अपनी सेवाएं दे रहे हैं जिनसे पाठक वर्ग को समाचार पत्रों का पूरा लाभ मिल रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. राधेश्याम शर्मा, हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप और आयाम हरियाणा साहित्य अकादमी पंचूकला, वर्ष 2002. पृ. 70
2. केशवानंद ममगाई, पत्रकारिता के विकास में हरियाणा की देन, हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला, वर्ष 2001, 79 80
3. केशवानंद ममगाई, हरियाणा में पत्रकारिता का विकास (संपादित) हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला वर्ष 2004 392 393
4. चन्द्रकांता सूद, पंजाब में हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास, पृ. 172, 192
5. वेद प्रताप वैदिक, हिन्दी पत्रकारिता के विविध आयाम नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, वर्ष 1976, पृ. 206
6. एन.सी. पंत पत्रकारिता का इतिहास, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2002, पृ. 151,152

7. जोशी सुशील – हिन्दी पत्रकारिता रू विकास और विविध आयाम (1986), राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
8. दैनिक भास्कर, पानीपत के संपादकीय विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार
9. पुरोहित, अनिल किषोर, आधुनिक समाचार–पत्र प्रबंधन (1999), आदित्य पब्लिशर्स, नई दिल्ली
10. भट्, राजेंद्र षंकर पत्र, पत्रकार और पत्रकारिता (1990), प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली
11. पंत, नवीन चंद्र, समाचार लेखन एवं संपादन (2001), कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली
12. पुनिया, महासिंह, पत्रकारिता का बदलता स्वरूप (2004), हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
13. भानावत, संजीव, समाचार माध्यमों का संगठन एवं प्रबंध (2002), सिंहली प्रकाशन, जयपुर
14. मलिक, अषोक, सूचना प्रोद्यौगिकी एवं पत्रकारिता (2002), हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
15. पराडकर और हिंदी पत्रकारिता की चुनौतियां, 'संपादित' (1987) विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
16. ममगाईहिन्दी पत्रकारिता के विकास में हरियाणा की देन (2001), हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
17. दयाल, मनोज, मीडिया शोध (2003), हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला